**पाठ 10: प्रामाणिक मसीही सेवकाई**

क. **यीशु के अनुयायी दुःख सहेंगे**

1. यीशु मसीह के सेवक के रूप में पौलुस अपने दुःखों का वर्णन कैसे करता है? 2 कुरिन्थियों 4:7–18 (2 कुरिन्थियों 11:24–27 भी देखें।)
2. फिलिप्पियों 3:7–11 — क्या पौलुस दुःख उठाना चाहता था, या वह केवल यीशु का अनुयायी होने के कारण दुःख सहने के लिए तैयार था?
3. जब हम यीशु के अनुयायी होने के कारण दुःख उठाते हैं, तो हमें कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिए? (1 पतरस 4:14–17; लूका 6:22–23 आदि।)
4. उस अवसर को साझा कीजिए जब आपने यीशु के अनुयायी के रूप में दूसरों की सेवा करते हुए दुःख या कष्ट का अनुभव किया।
5. जब हम उसके अनुयायी होने के कारण दुःख सहते हैं, तब अपनी दृष्टि यीशु पर लगाए रखना क्यों आवश्यक है? (इब्रानियों 12:1–3)

ख. **यीशु के अनुयायियों के पास आशा है और वे आशा का सन्देश बाँटते हैं**

1. 2 कुरिन्थियों 5:1–8 — यीशु के अनुयायियों के रूप में हमारी आशा क्या है? (यूहन्ना 3:16; 14:1–3; तीतुस 2:11–13 भी देखें।)
2. "देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना" का क्या अर्थ है?
3. मसीह के राजदूत होने के नाते कौन-सी बात यीशु के अनुयायियों को दूसरों के साथ आशा का सन्देश बाँटने के लिए प्रेरित करती है? (2 कुरिन्थियों 5:14–21)
4. उस अवसर को साझा कीजिए जब आपको यीशु के अनुयायी के रूप में किसी के साथ आशा का सन्देश बाँटने का अवसर मिला।

ग. **यीशु के अनुयायी पवित्रता के लिए बुलाए गए हैं**

1. 2 कुरिन्थियों 6:14 — अविश्वासियों के साथ असमान जुए में जुतने का क्या अर्थ है?
2. 2 कुरिन्थियों 6:16–18 में पौलुस कौन-सा महत्त्वपूर्ण सत्य बताता है?
3. नए नियम में और कहाँ हमें यीशु के अनुयायियों के लिए पवित्रता का आह्वान मिलता है? (1 पतरस 1:13–16; 1 यूहन्ना 3:1–3 आदि।)
4. यह स्मरण रखना क्यों आवश्यक है कि हमारा उद्धार हमारे पवित्र जीवन के कारण नहीं हुआ है, बल्कि परमेश्वर की छुड़ाई हुई सन्तान होने के नाते हमें पवित्रता के लिए बुलाया गया है? (इफिसियों 2:8–10; इफिसियों 4:1–3 आदि।)

घ. **यीशु के अनुयायी प्रभु में आनन्दित होते हैं**

1. 2 कुरिन्थियों 7:4–7 — जब तीतुस ने पौलुस को कुरिन्थुस के मसीहियों के विषय में समाचार दिया, तो उसके पास प्रभु में आनन्दित होने के कौन-कौन से कारण थे?
2. फिलिप्पियों के नाम अपनी पत्री में पौलुस विश्वासियों को सदा प्रभु में आनन्दित रहने के लिए प्रोत्साहित करता है (फिलिप्पियों 4:4)। यह कैसे सम्भव है?
3. बाइबल से उस अवसर को साझा कीजिए जब पौलुस ने कठिन परिस्थिति में भी प्रभु में आनन्द मनाया। (प्रेरितों के काम 16:25)
4. उस समय को साझा कीजिए जब आपने प्रभु में आनन्द मनाने की स्वतंत्रता का अनुभव किया।